International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA)
Multidisciplinary Peer-Reviewed Online Open Access Journal Impact Factor: 5.4
Volume 6, Issue 1, Jan-Mar 2026 ID: IJCRTA000233 ISSN: 2583-1801
Email: ijcrta@gmail.com Website: www.ijcrta.org

सामाजिक पूंजी निर्माण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका : रीवा नगर का एक अनुभवजन्य अध्ययन

डॉ. शाहेदा सिद्दीकी

Author Affiliation:
सह प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

Citation of Article: सिद्दीकी, शाहेदा (2026). सामाजिक पूंजी निर्माण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका : रीवा नगर का एक अनुभवजन्य अध्ययन. International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA) ISSN: 2583-1801, 6 (1), pg. 56-62. ijcrta.org

DOI: 10.5281/zenodo.18926868

सारांश:

यह अध्ययन रीवा नगर में स्वयं सहायता समूहों (SHGs) की सामाजिक पूंजी निर्माण में भूमिका का अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है। सामाजिक पूंजी का आशय विश्वास, सहयोग, नेटवर्क और सामुदायिक सहभागिता से है, जो किसी भी समाज के विकास का आधार होती है। अध्ययन हेतु 60 महिला सदस्यों का सर्वेक्षण किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि SHG सदस्यता ने महिलाओं के सामाजिक संबंध, सामूहिक निर्णय क्षमता, पारिवारिक सम्मान और सामुदायिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि की। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि आर्थिक गतिविधि SHG का प्रारंभिक उद्देश्य होती है, किन्तु उसका प्रमुख प्रभाव सामाजिक सशक्तिकरण और सामाजिक पूंजी निर्माण के रूप में सामने आता है।

प्रस्तावना:

सामाजिक पूंजी (Social Capital) आधुनिक समाजशास्त्र की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका संबंध विश्वास, पारस्परिक सहयोग, सामाजिक नेटवर्क और सामुदायिक सहभागिता से है। किसी भी समाज के सतत विकास के लिए केवल आर्थिक संसाधन पर्याप्त नहीं होते, बल्कि लोगों के बीच सहयोग और सामूहिकता की भावना भी आवश्यक होती है। ऐसे में स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups–SHGs) सामाजिक पूंजी निर्माण के प्रभावी माध्यम के रूप में उभरे हैं।

रीवा नगर, मध्यप्रदेश का एक अर्द्धशहरी क्षेत्र है जहाँ निम्न और मध्यम आय वर्ग की महिलाओं की सामाजिक भागीदारी लंबे समय तक सीमित रही है। आर्थिक निर्भरता और सामाजिक संकोच के कारण वे परिवार और समुदाय के निर्णयों में सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाती थीं। स्वयं सहायता समूहों के गठन ने इस स्थिति में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ की है। नियमित बैठकों, सामूहिक बचत, ऋण सुविधा और सामाजिक संवाद के माध्यम से महिलाओं में आपसी विश्वास, सहयोग और सार्वजनिक सहभागिता की भावना विकसित हुई है।

अध्ययन के उद्देश्य:

इस अध्ययन का उद्देश्य रीवा नगर में स्वयं सहायता समूहों द्वारा सामाजिक पूंजी निर्माण की प्रक्रिया को समझना तथा यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार SHG महिलाओं के सामाजिक संबंध, सामुदायिक पहचान और सहभागिता को सुदृढ़ कर सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान करते हैं। अध्ययन के उद्देश्य को निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. रीवा नगर में स्वयं सहायता समूहों की संरचना और कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
2. SHG सदस्यों के बीच आपसी विश्वास और सहयोग की स्थिति का विश्लेषण करना।
3. महिलाओं के सामाजिक नेटवर्क (परिवार, समुदाय एवं संस्थागत संपर्क) में आए परिवर्तन का मूल्यांकन करना।
4. सामुदायिक गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता पर SHG के प्रभाव को समझना।
5. पारिवारिक निर्णय-निर्माण क्षमता और सामाजिक प्रतिष्ठा में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।
6. सामाजिक पूंजी निर्माण में SHG की समग्र भूमिका का आकलन करना।

अध्ययन क्षेत्र एवं नमूना:

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेश के विंध्य क्षेत्र में स्थित रीवा नगर है, जो शहरी तथा ग्रामीण विशेषताओं का मिश्रित स्वरूप प्रस्तुत करता है। नगर के विभिन्न वार्डों में निम्न एवं मध्यम आय वर्ग की बड़ी संख्या निवास करती है, जहाँ महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक भागीदारी परंपरागत रूप से सीमित रही है। पिछले कुछ वर्षों में यहाँ स्वयं सहायता समूहों का विस्तार हुआ है, विशेष रूप से आजीविका कार्यक्रमों और नगरीय आजीविका मिशन के माध्यम से। इस कारण यह क्षेत्र सामाजिक पूंजी निर्माण के अध्ययन के लिए उपयुक्त माना गया।

अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति (Purposive Sampling) का उपयोग किया गया। कुल 6 स्वयं सहायता समूहों का चयन किया गया, जो कम से कम दो वर्षों से सक्रिय रूप से कार्यरत थे। प्रत्येक समूह से 10 महिला सदस्यों का चयन कर कुल 60 उत्तरदाताओं को अध्ययन में शामिल किया गया। चयन में विभिन्न आयु वर्ग, वैवाहिक स्थिति और आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाओं को सम्मिलित किया गया, ताकि सामाजिक अनुभवों की विविधता प्राप्त हो सके।

यह नमूना आकार स्थानीय स्तर पर सामाजिक संबंधों, सहभागिता और सामाजिक प्रतिष्ठा में आए परिवर्तनों को समझने के लिए पर्याप्त और प्रतिनिधिक माना गया।

डेटा संकलन विधि:

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से जानकारी एकत्रित की गई। प्राथमिक डेटा संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची, समूह चर्चा तथा प्रत्यक्ष अवलोकन की विधियों का उपयोग किया गया। सर्वप्रथम चयनित स्वयं सहायता समूहों की महिला सदस्यों से संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से व्यक्तिगत जानकारी, सामाजिक संबंध, निर्णय क्षमता तथा सहभागिता से संबंधित तथ्य प्राप्त किए गए। इससे मात्रात्मक तथा तुलनात्मक जानकारी एकत्रित करना संभव हुआ।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक समूह के साथ सामूहिक चर्चा (Focus Group Discussion) आयोजित की गई, जिसमें समूह की कार्यप्रणाली, आपसी विश्वास, सहयोग तथा सामाजिक परिवर्तन के अनुभवों पर खुलकर विचार साझा किए गए। इस प्रक्रिया से गुणात्मक जानकारी प्राप्त हुई, जो सामाजिक पूंजी के वास्तविक स्वरूप को समझने में सहायक रही।

प्रत्यक्ष अवलोकन के अंतर्गत समूह बैठकों में सहभागिता कर व्यवहार, संवाद शैली, नेतृत्व और सहभागिता के स्तर का अध्ययन किया गया। साथ ही समूह रजिस्टर, बचत अभिलेख और बैठक कार्यवृत्त का भी परीक्षण किया गया। द्वितीयक स्रोतों के रूप में सरकारी रिपोर्ट, मिशन दस्तावेज, शोध लेख और संबंधित साहित्य का उपयोग किया गया। इन सभी विधियों के संयोजन से अध्ययन को अधिक विश्वसनीय और तथ्यपरक बनाया गया।

सामाजिक पूंजी के संकेतक:

सामाजिक पूंजी को मापने के लिए ऐसे तत्वों का चयन किया जाता है जो समुदाय में विश्वास, सहयोग और सहभागिता की वास्तविक स्थिति को दर्शाते हों। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित प्रमुख संकेतकों के आधार पर सामाजिक पूंजी का मूल्यांकन किया गया—

1. आपसी विश्वास (Mutual Trust): समूह के सदस्यों के बीच पारस्परिक भरोसा सामाजिक पूंजी का आधार है। ऋण लेन-देन की पारदर्शिता, समय पर पुनर्भुगतान तथा व्यक्तिगत समस्याओं में सहयोग इसके प्रमुख संकेतक माने गए।

2. सहयोग और पारस्परिकता (Reciprocity & Cooperation): सदस्यों द्वारा एक-दूसरे की आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं में सहायता करना, सामूहिक कार्यों में भाग लेना तथा संकट के समय सहयोग देना सामाजिक एकता को दर्शाता है।

3. सामाजिक नेटवर्क (Social Network Expansion): परिवार से बाहर बैंक, सरकारी कार्यालय, पंचायत/नगर निकाय और अन्य संस्थाओं से संपर्क का विस्तार सामाजिक पूंजी के विकास का महत्वपूर्ण संकेतक है।

4. सामुदायिक सहभागिता (Community Participation): स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य कार्यक्रम, शिक्षा जागरूकता तथा स्थानीय बैठकों में भागीदारी महिलाओं की सक्रिय सामाजिक भूमिका को दर्शाती है।

5. निर्णय-निर्माण क्षमता (Decision Making Ability): परिवार और समूह दोनों स्तरों पर निर्णय लेने में सहभागिता सामाजिक सशक्तिकरण और प्रभाव को मापने का संकेतक है।

6. सामाजिक प्रतिष्ठा और मान्यता (Social Recognition): समुदाय द्वारा सम्मान, सलाह लेना तथा सार्वजनिक कार्यक्रमों में आमंत्रण मिलना सामाजिक पूंजी की स्वीकृति को प्रदर्शित करता है।

इन संकेतकों के आधार पर SHG की सामाजिक पूंजी निर्माण में भूमिका का विश्लेषण किया गया।

डेटा विश्लेषण:

तालिका 1 : SHG में शामिल होने का प्रमुख उद्देश्य

उद्देश्य	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत
ऋण सुविधा	24	40%
आय बढ़ाना	18	30%
बचत	10	17%
सामाजिक जुड़ाव	8	13%
कुल	60	100%

इस तालिका से ज्ञात होता है कि SHG से जुड़ने का प्रमुख उद्देश्य आर्थिक रहा। 40% महिलाएँ ऋण सुविधा प्राप्त करने के लिए समूह में शामिल हुईं, जबकि 30% ने आय बढ़ाने को कारण बताया। 17% ने बचत की आदत

विकसित करने और 13% ने सामाजिक जुड़ाव के लिए समूह में भागीदारी की। इससे स्पष्ट है कि SHG का प्रारंभिक आकर्षण आर्थिक है, परंतु सामाजिक जुड़ाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह दर्शाता है कि समूह आर्थिक आवश्यकता से शुरू होकर सामाजिक प्रक्रिया में परिवर्तित होता है।

तालिका 2 : SHG के बाद आपसी विश्वास में परिवर्तन

विश्वास स्तर	पहले	बाद में
उच्च	8 (13%)	38 (63%)
मध्यम	26 (43%)	18 (30%)
निम्न	26 (43%)	4 (7%)

SHG से पहले केवल 13% महिलाओं में उच्च स्तर का विश्वास था, जबकि 43% मध्यम और 43% निम्न स्तर पर थीं। SHG सदस्यता के बाद उच्च विश्वास 63% तक पहुँच गया और निम्न स्तर घटकर 7% रह गया। यह परिवर्तन समूह की नियमित बैठकों, पारदर्शी लेन-देन और पारस्परिक सहयोग के कारण हुआ। इससे सिद्ध होता है कि SHG सामाजिक पूंजी के मूल तत्व—विश्वास—को मजबूत करता है।

तालिका 3 : सामाजिक संपर्क का विस्तार

संपर्क क्षेत्र	SHG से पहले	SHG के बाद
परिवार तक सीमित	42 (70%)	10 (17%)
पड़ोस	12 (20%)	20 (33%)
बैंक/संस्था	4 (7%)	18 (30%)
पंचायत/नगर निकाय	2 (3%)	12 (20%)

SHG से पहले 70% महिलाएँ केवल परिवार तक सीमित थीं। समूह से जुड़ने के बाद यह घटकर 17% रह गया। बैंक से संपर्क 7% से बढ़कर 30% तथा स्थानीय निकाय से 3% से बढ़कर 20% हो गया। यह दर्शाता है कि SHG महिलाओं को निजी दायरे से निकालकर सार्वजनिक क्षेत्र से जोड़ता है। सामाजिक नेटवर्क का विस्तार सामाजिक सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण संकेतक है।

तालिका 4 : सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी

गतिविधि	पहले (%)	बाद में (%)
स्वच्छता अभियान	10	62
शिक्षा जागरूकता	8	55
स्वास्थ्य कार्यक्रम	12	60
ग्रामसभा/बैठक	5	48

समूह से पहले महिलाओं की सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी अत्यंत कम थी—स्वच्छता अभियान में 10% और ग्रामसभा में 5%। SHG के बाद यह क्रमशः 62% और 48% हो गया। यह परिवर्तन सामूहिकता और आत्मविश्वास के विकास को दर्शाता है। महिलाएँ अब सामुदायिक जिम्मेदारी निभाने लगी हैं।

तालिका 5 : पारिवारिक निर्णय क्षमता

निर्णय क्षेत्र	पहले सहभागिता	बाद में सहभागिता
बच्चों की शिक्षा	22%	72%
स्वास्थ्य खर्च	18%	68%
घरेलू खरीद	30%	80%
सामाजिक कार्यक्रम	25%	70%

SHG से पहले बच्चों की शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी 22% थी, जो बाद में 72% हो गई। स्वास्थ्य खर्च और घरेलू खरीद में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह आर्थिक योगदान और आत्मविश्वास के कारण घरेलू शक्ति संतुलन में आए परिवर्तन को दर्शाता है।

तालिका 6 : सामाजिक प्रतिष्ठा में परिवर्तन

निर्णय क्षेत्र	पहले सहभागिता	बाद में सहभागिता
बच्चों की शिक्षा	22%	72%
स्वास्थ्य खर्च	18%	68%
घरेलू खरीद	30%	80%
सामाजिक कार्यक्रम	25%	70%

सामाजिक प्रतिष्ठा के संकेतकों में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया। परिवार और समुदाय में महिलाओं की राय को महत्व मिलने लगा और सामाजिक कार्यक्रमों में उनकी भूमिका बढ़ी। यह दर्शाता है कि SHG महिलाओं की पहचान गृहिणी से सामाजिक सहभागी नागरिक में परिवर्तित करता है। उपरोक्त सभी संकेतकों को मिलाकर देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि SHG सामाजिक पूंजी निर्माण की एक क्रमिक प्रक्रिया विकसित करता है—

आर्थिक गतिविधि → विश्वास निर्माण → नेटवर्क विस्तार → सहभागिता → नेतृत्व → सामाजिक प्रतिष्ठा:

प्रारंभ में महिलाएँ आर्थिक आवश्यकता के कारण जुड़ती हैं, परन्तु नियमित संपर्क और सामूहिक अनुभव से विश्वास विकसित होता है। विश्वास से सहयोग बढ़ता है और सहयोग से सामाजिक नेटवर्क का विस्तार होता है। नेटवर्क विस्तार से सहभागिता बढ़ती है और अंततः सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। साक्षात्कार के दौरान कई महिलाओं ने बताया कि पहले वे बैंक या सरकारी कार्यालय जाने से डरती थीं, पर अब स्वयं दस्तावेज तैयार करती हैं। कुछ समूहों ने सामूहिक रूप से स्वच्छता अभियान और विद्यालय नामांकन अभियान चलाए, जिससे समुदाय में उनकी पहचान बढ़ी। यह दर्शाता है कि सामाजिक पूंजी केवल संबंधों का विस्तार नहीं बल्कि मानसिकता परिवर्तन की प्रक्रिया भी है।

डेटा विश्लेषण से स्पष्ट है कि स्वयं सहायता समूह आर्थिक संस्था से अधिक सामाजिक परिवर्तन की संरचना है। यह महिलाओं में विश्वास, सहयोग और सामाजिक पहचान का निर्माण करता है। सामाजिक पूंजी के विकास से न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामुदायिक स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन संभव होता है। अतः रीवा नगर के संदर्भ में SHG महिलाओं को निजी क्षेत्र से सार्वजनिक क्षेत्र तक ले जाकर उन्हें सक्रिय नागरिक के रूप में स्थापित करता है, जो सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है।

प्रमुख निष्कर्ष:

1. विश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि – स्वयं सहायता समूहों की नियमित बैठकों, पारदर्शी बचत-ऋण व्यवस्था और पारस्परिक सहयोग से सदस्यों के बीच आपसी विश्वास मजबूत हुआ, जो सामाजिक पूंजी का मूल आधार है।

2. सामाजिक नेटवर्क का विस्तार – SHG से जुड़ने के बाद महिलाओं का संपर्क परिवार तक सीमित न रहकर बैंक, नगर निकाय, सरकारी संस्थाओं और अन्य समुदायों तक विस्तृत हुआ।

3. सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि – स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य कार्यक्रम, शिक्षा जागरूकता और स्थानीय बैठकों में महिलाओं की भागीदारी में स्पष्ट वृद्धि देखी गई।

4. पारिवारिक निर्णय-निर्माण क्षमता में सुधार – बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य खर्च और घरेलू आर्थिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका पहले की अपेक्षा अधिक सशक्त हुई।

5. सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि – समुदाय द्वारा सम्मान, सलाह लेना तथा सार्वजनिक कार्यक्रमों में आमंत्रण मिलना बढ़ा, जिससे महिलाओं की सामाजिक पहचान मजबूत हुई।

6. नेतृत्व और आत्मविश्वास का विकास – समूह की गतिविधियों ने महिलाओं में नेतृत्व क्षमता और सार्वजनिक रूप से अपनी बात रखने का साहस विकसित किया।

7. सामाजिक पूंजी का निर्माण – विश्वास, सहयोग, नेटवर्क और सहभागिता के संयुक्त प्रभाव से SHG सामाजिक पूंजी निर्माण का प्रभावी माध्यम सिद्ध हुआ।

8. आर्थिक से सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया – अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि SHG का प्रारंभिक उद्देश्य आर्थिक होता है, परंतु उसका वास्तविक प्रभाव व्यापक सामाजिक सशक्तिकरण के रूप में सामने आता है।

सुझाव:

1. जागरूकता एवं लैंगिक संवेदनशीलता कार्यक्रम – परिवार और समुदाय स्तर पर नियमित जागरूकता अभियान चलाए जाएँ ताकि महिलाओं की सामाजिक भागीदारी को स्वीकृति मिले और पितृसत्तात्मक सोच में परिवर्तन हो।

2. कौशल एवं प्रबंधन प्रशिक्षण – समूह सदस्यों को लेखा-जोखा, बैंकिंग प्रक्रिया, नेतृत्व विकास, विपणन और डिजिटल साक्षरता से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे वे समूह गतिविधियों को प्रभावी ढंग से संचालित कर सकें।

3. डिजिटल सशक्तिकरण – महिलाओं को ऑनलाइन भुगतान, मोबाइल बैंकिंग और सोशल मीडिया विपणन का प्रशिक्षण देकर उन्हें व्यापक बाजार से जोड़ा जाए।

4. विपणन सहायता एवं ब्रांडिंग – स्थानीय स्तर पर महिला उत्पाद बिक्री केंद्र स्थापित किए जाएँ तथा उत्पादों की पैकेजिंग और ब्रांडिंग में सरकारी व संस्थागत सहयोग प्रदान किया जाए।

5. निरंतर मार्गदर्शन और परामर्श – स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षित मार्गदर्शक (Mentor) उपलब्ध कराए जाएँ जो नियमित रूप से उनकी गतिविधियों की निगरानी और समस्या समाधान में सहायता करें।

6. संस्थागत समन्वय – स्थानीय प्रशासन, बैंक, गैर-सरकारी संगठन और आजीविका मिशन के बीच समन्वय बढ़ाकर समूहों को ऋण, प्रशिक्षण और संसाधन समय पर उपलब्ध कराए जाएँ।

इन उपायों के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों की कार्यक्षमता बढ़ेगी और सामाजिक पूंजी निर्माण की प्रक्रिया अधिक प्रभावी तथा स्थायी बन सकेगी। स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि महिलाओं और उनके परिवारों के बीच लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता विकसित की जाए, ताकि उनकी सामाजिक भागीदारी को सहज स्वीकृति मिल सके। इसके साथ-साथ समूह सदस्यों को लेखा-जोखा, बैंकिंग प्रक्रिया, नेतृत्व विकास, विपणन तथा डिजिटल साक्षरता का व्यावहारिक प्रशिक्षण नियमित रूप से प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे समूह गतिविधियों का कुशल संचालन कर सकें। महिलाओं को ऑनलाइन भुगतान, मोबाइल बैंकिंग और सोशल मीडिया विपणन से जोड़कर उनके उत्पादों के लिए व्यापक बाजार उपलब्ध कराया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर महिला उत्पाद बिक्री केंद्र स्थापित कर उत्पादों की पैकेजिंग और ब्रांडिंग में संस्थागत सहयोग दिया जाए, जिससे आय में स्थिरता आए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक समूह को प्रशिक्षित मार्गदर्शक या परामर्शदाता उपलब्ध कराया जाए, जो नियमित रूप से समस्याओं का समाधान और दिशा-निर्देशन दे सके। स्थानीय प्रशासन, बैंक, गैर-सरकारी संगठनों और आजीविका मिशन के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर समय पर ऋण, प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, ताकि स्वयं सहायता समूह सामाजिक पूंजी निर्माण और महिला सशक्तिकरण के अधिक प्रभावी माध्यम बन सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. कबीर, नैला. "क्या सूक्ष्म वित्त महिला सशक्तिकरण का जादुई उपाय है? दक्षिण एशिया के निष्कर्षों का विश्लेषण." आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 40, अंक 44–45, 2005.

2. मेयॉक्स, लिंडा. "सूक्ष्म वित्त के माध्यम से सामाजिक पूंजी और महिला सशक्तिकरण." डेवलपमेंट एंड चेंज, खंड 32, अंक 3, 2001.

3. स्वेन, रंजुला बाली, एवं ए. वर्गीज. "क्या स्वयं सहायता समूह सहभागिता से संपत्ति निर्माण होता है?" वर्ल्ड डेवलपमेंट, खंड 37, अंक 10, 2009.

4. पुटनम, रॉबर्ट डी. लोकतंत्र को सफल बनाना : सामाजिक परंपराएँ और नागरिक सहभागिता. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993.

5. भारतीय रिज़र्व बैंक. वित्तीय समावेशन समिति (रंगराजन समिति) रिपोर्ट. RBI, 2008.

6. स्व-नियोजित महिला संघ (SEWA). महिला आजीविका पर वार्षिक प्रतिवेदन एवं अध्ययन. SEWA, विभिन्न वर्ष.